

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात

की

पीएच. डी.(हिन्दी)उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा

शोध शीर्षक

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के

विविध: आयाम

अनुसंधित्सु

कृष्ण देव तिवारी

हिन्दी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा

शोध निर्देशक

प्रो. शन्नो पाण्डेय

हिन्दी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, वड़ोदरा, गुजरात

शोध प्रेरणा एवं विषय चयन

भाव और संवेदना वह तत्व हैं जो साहित्य सृजन का माध्यम बनते हैं किन्तु साहित्य की अभिव्यक्ति भाषा पर आधारित है। साहित्यिक अभिव्यक्ति के मामले में हिन्दी भाषा अत्यंत समृद्ध है और नित नवीन कलेवर के साथ अग्रसर भी है। विकास के इसी क्रम में आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल आधुनिक काल से गुजरते हुए हिन्दी भाषा का साहित्य विमर्शों के युग में प्रवेश करता है जहाँ उसे प्रमुखतः स्त्री विमर्श और दलित विमर्श के कलेवर से अलंकृत होने का सौभाग्य प्राप्त होता है। चूँकि प्रस्तुत शोध प्रबंध का शीर्षक “नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम” है जो की महिला लेखन से जुड़ा हुआ है। महिला कथा साहित्य लेखन एवं लेखिकाओं की एक लंबी सूची है जिनमें से नासिरा शर्मा का कथा साहित्य आलोच्य शोध के केंद्र में विश्लेषित करना ही मेरी इच्छा थी कारण कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों एवं कहानियों में अन्य स्त्री लेखिकाओं की भांति सिर्फ स्त्री-विमर्श को बढ़ावा देकर यश प्राप्ति की लालसा मात्र नहीं दिखती बल्कि नारी संवेदना एवं सिकन की व्यापक मनोभूमि पल्लवित एवं पुष्पित होती जान पड़ती है। नासिरा शर्मा हिन्दी की नामचीन लेखिका हैं। नारी संवेदना परक उपन्यास और कहानी संग्रह इनके साहित्यिक अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम हैं। एक सशक्त विधा के रूप में स्त्री-विमर्श का गहरा रिश्ता समाज में लोकसंवेदन दृष्टि के विकास से है। आधुनिक परिदृश्य में साहित्य का सृजन स्त्री आकांक्षाओं, संवेदनाओं एवं उसके मार्मिक पक्षों की अवमानना करके संभव नहीं है। फिर एक कथाकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती होती है अपने समय की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का प्रश्न। श्रेष्ठ कथा साहित्य में जीवन के यथार्थ का ताप और गतिशीलता होती है। स्त्री संवेदना से मुंह फेरकर जीवन की गतिशीलता का मानचित्र हम साहित्य में नहीं खड़ा कर सकते। कमोवेश स्त्रीत्व एवं स्त्री के अस्मिता की पहचान स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्रोत्तर कथा साहित्य में परिलक्षित होता है, परंतु इस कैनवास पर नारी स्वतंत्रता की वायवीयता बहुतायत मात्रा में दृष्टिगोचर होता है लेकिन वास्तविक स्त्री अस्मिता की खोज, उसकी वैचारिक स्वतंत्रता का स्वर हिन्दी की ख्यातिलब्ध लेखिका नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में परिलक्षित होता है।

स्वतंत्रता पूर्व स्त्री-विमर्श पर कलम चलाने वाली लेखिकाओं में बंग महिला, महादेवी वर्मा, शिवरानी देवी, उषा देवी मित्रा, सत्यवती मालिक, कमला चौधरी, सुभद्रा चौहान, होमवती देवी, चन्द्रकिरण सोनरेक्सा इत्यादि लेखिकाओं ने सहानुभूति परकता से निजात पाकर स्वानुभूति परक स्त्री लेखन को चलन में लाने की सफल कोशिश की किन्तु स्वतंत्रता के बाद जो स्त्री लेखन पर कार्य हुआ वह वास्तव में साहित्य को शिखर पर स्थापित करने में अपनी महती भूमिका निभाई। उनमें से एक नाम नासिरा शर्मा का भी आता है जिनके कथा साहित्य के कुछ प्रमुख उपन्यासों एवं कहानियों में ‘स्त्री – विमर्श’ के स्थान पर ‘स्त्री संवेदना’ का स्वर ज्यादा मुखर हुआ है। साहित्य सर्जना की ओर मेरा मन

बचपन से आकृष्ट था अतः अध्ययन की लालसा बढ़ती गई इसी क्रम में सन्-2012-13 में नासिरा शर्मा का उपन्यास 'शाल्मली' मेरे हाथ लगा जिसने महिला कथाकारों के साहित्य को पढ़ने पर बाध्य किया। लगभग 5-6 लेखिकाओं (ममता कालिया, मन्नु भण्डारी, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा, राजी सेठ, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा) के कथा साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात मुझे स्त्री विमर्श से ज्यादा तर्कसंगत नारी संवेदना पर शोध करने की रुचि जागृत हुई। इस संबंध में मैंने प्रो. शन्नो एच. पाण्डेय मैडम से अपनी इच्छा जाहिर किया और परामर्श भी मागा। उन्होंने मेरे शोध पिपासा के महत्व को समझते हुए नासिरा शर्मा के कथा साहित्य पर संवेदनात्मक शोध करने की अनुमति दे दी। शैक्षणिक औपचिकताओं के बाद सबसे बड़ी समस्या यह पैदा हुई कि शीर्षक का निर्धारण कैसे किया जाय ? शोध की उपयोगिता, मौलिकता और नवीनता को ध्यान में रखते हुए मैंने शोध गंगा एवं अन्य माध्यमों से यह ज्ञात किया कि नासिरा शर्मा के कथा साहित्य पर बहुतायत मात्रा में कार्य हुआ है किन्तु नारी संवेदना विषयक कोई शोध या पुस्तक मेरे सज्ञान में उपलब्ध नहीं जान पड़ी अतः महाराज सायजीराव विश्वविद्यालय, के हिन्दी डिपार्टमेंट की वाइवा कमेटी, शोध निर्देशिका एवं शोधार्थी का शोध की नवीनता, मौलिकता पर दिया गया तार्किक साक्षात्कार से यह सुनिश्चित हुआ कि इस शोध प्रबंध का शीर्षक "नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम" पूर्णतः मौलिक एवं नवीन है

पूर्व में जो शोध कार्य नासिरा शर्मा के साहित्य पर हुए हैं उनमें स्त्री विमर्श को केंद्र में रखकर औरत के हक और अधिकार उसकी समस्याओं को दया के भाव से देखकर सदासयता प्रकट किया गया है यथा

—

- (1) नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी विमर्श (डॉ राखी मौर्या)
- (2) नासिरा शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व (डॉ विजय राउत)
- (3) नासिरा शर्मा एक :मूल्यांकन (संपादक -डॉ फ़िरोज खान)

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में स्त्री को पूजनीय बताया गया है। उसे देवी, लक्ष्मी, दुर्गा आदि अलंकरणों से अलंकृत किया गया है। इतना ही नहीं स्वयं महिला कथाकारों ने भी उसके हक और अधिकार को केंद्र में रखकर अपनी लेखनी का लोहा मनवाया है जिनमें से एक नाम नासिरा शर्मा का भी है। नासिरा शर्मा अपने कथा साहित्य में शोषित स्त्री के संवेदनाओं को जागृत कर उसे स्वयं अपनी लड़ाई मर्यादा और विवेक के साथ लड़ने और उचित निर्णय लेकर भारतीय संस्कृति के संरक्षण का दारोमदार औरत के जिम्मे सुपुर्द करने की कवायद करती नजर आती हैं, कारण की औरतें ;पुरुषों से ज्यादा संवेदनशील एवं सहनशील होती हैं। लेखिका अपने उपन्यास 'सात नदियां एक समंदर', 'शाल्मली', 'ठीकरे की मंगनी' एवं दस-बारह कहानी संग्रहों के कई कहानियों में नारी को राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, वैवाहिक, रोजगार की समस्या, राष्ट्र की सुरक्षा, वैश्विक संकट आदि! विभिन्न

आयामों के प्रति संवेदनशील पाया है और उन्हीं पात्रों को साहित्य के यथार्थ धरातल पर अंकित करने की सफल कोशिश भी की हैं। आलोच्य शोध प्रबंध में मैंने नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के अंतर्गत उसके अवदान पर बल दिया है। उपरोक्त पैराग्राफ में जिन – जिन बिंदुओं को दिखाया गया है वही मेरे इस शोध शीर्षक की नवीनता का प्रमाण है।

“नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम” शोध विषय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए नासिरा शर्मा के उपन्यासों एवं कहानियों में स्त्री संवेदना की चर्चा करना उचित था क्योंकि विषय की व्यापकता उनकी उपलब्धियों से जुड़ती हैं। इस विषय पर केंद्रित उपन्यासों एवं कहानियों में नारी जीवन से जुड़े सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक मुद्दों को पहचानकर संवेदनात्मक स्तर विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। मुख्य विषय के साथ ही स्वतंत्रता के बाद की महिला कथाकारों के प्रमुख कथा साहित्य को जो नारी संवेदना के विकास को रूपायित करते हैं, उनके विकास को भी यथासंभव सामिल करने का प्रयास किया है।

नासिरा शर्मा: साहित्यिक चिंतन एवं कृतित्व

नासिरा शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर में २२ अगस्त १९४८ ई. को हुआ। उनके पिता जामिन अली उर्दू के प्रोफेसर तथा माता नाजनीन बेगम एक सफल गृहणी थीं। परिवार में सबसे छोटी संतान होने के कारण नासिरा का बचपन बेहद लाड़-प्यार में गुज़रा। सात वर्ष की उम्र में उनके पिता जी का देहांत हो गया। इस पारिवारिक संकट के बाद उनके संपूर्ण उत्तरदायित्वों का पालन उनकी माता ने किया। नासिरा शर्मा बचपन से ही कुशाग्र और विचारवान प्रवृत्ति की थीं। नासिरा जी का साहित्य विविध वर्गीय है। चरित्र की अंतरात्मा में उतरना उन्हें बखूबी आता है। शाल्मली के चरित्र का विकास अनेक छबियों में साकार रूप में आबद्ध है, तो ठीकरे की मंगनी की 'महरूख' अपने आधुनिक मगर स्वतंत्र वजूद के लिए लड़ती स्त्री के रूप में भी उतनी ही जीवंत है। नासिरा शर्मा ने अक्सर अनेक मुद्दों पर खुली चर्चा के दौरान यह स्वीकार किया है कि वे आधुनिकता के नाम पर स्त्री स्वच्छन्दता की पक्षधर नहीं हैं। वे हर हाल में विवाह और परिवार को बनाये रखने में विश्वास रखती हैं, अगर एक बार में आधार खंडित हो जाये तो नयी पीढ़ी फैशन के नाम पर अनेक विकृतियों एवं असाध्य रोगों की शिकार हो जाएगी, जिसका प्रभाव समाज पर दूरगामी रूप से स्वस्थ नहीं होगा। इसलिए उनके नारीपात्र इतने आवेशी नहीं हैं। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से जो मकसद, जो उद्देश्य, जो आत्मा किसी रचना को दी है वह हर हाल में बरकरार रहनी चाहिए। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से गंगा-जमुनी संस्कृति का अद्भुत संगम है। जितने जीवंत उनके हिन्दू-पात्र, परिवेश और संस्कृति है उतने ही जीवंत मुस्लिम पात्र, परिवेश और बोली-बानी है। बोल-चाल, खान-पान, भाषा-

बोली के रंग भले ही अलग हों, मगर सबके अन्दर एक इंसान का दिल धड़कता है, अपने समय और समाज को जीते हुए सब पहले इंसान हैं, फिर कोई और पहचान है।

बकौल नासिरा शर्मा- “मैं सरहदों को नहीं पहचानती मेरी नज़र में सभी इंसान बराबर हैं।” उनकी संवेदना पर कहीं का भी इंसान अगर दस्तक देता है तो वहाँ उनकी कहानी का दरवाज़ा खुल जाता है। चाहे वहाँ 'जैतून के साये' का तौफ़ीक हो या 'पुले सरात' का हसन। इसमें संदेह नहीं की उन्होंने नयी दिशाएँ और और वैचारिक ज़मीन पर संवेदना से भरे चरित्र दिए हैं, जिसने हिंदी पाठक को चौकाया और गहरे प्रभावित भी किया। नासिरा जी की वैश्विक दृष्टि ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाया है। वह केवल निडर, साहसी, ईमानदार लेखिका ही नहीं बल्कि हिंदी भाषा साहित्य में उनका सृजनात्मक पत्रिका में योगदान महत्वपूर्ण माना जायेगा। विशेषकर जब वह सीमापार 'अफ़ग़ानिस्तान: बुजकशी का मैदान', जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, मरजीना का देश : इराक, जैसी रचना साहित्य को समर्पित करती हैं। नासिरा शर्मा ने अपने 'आत्मतर्पण' (हंस १९९२) में एक जगह लिखा है कि यदि मैं शर्मा जी से शादी न करती तो आधी दुनिया ही देख पाती। नासिरा शर्मा ने साहित्य की विभिन्न धाराओं पर बेबाकी से लिखा। उन्होंने कहानी, उपन्यास, अनुवाद, लेख, रिपोर्ताज, बाल-साहित्य, संपादन, नाटक, साक्षात्कार इत्यादि विधाओं पर लेखन किया है।

नासिरा शर्मा का उपन्यास साहित्य स्त्री को बन्धनों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है। परिवार तथा समाज द्वारा लादे गये बन्धनों को टुकराने की क्षमता उसने प्राप्त कर ली है। मुस्लिम समाज में पहले लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने नहीं दिया जाता था, किन्तु अब परिस्थिति बदल रही है। ठीकरे की मंगनी उपन्यास की नायिका 'महरूख' की पढाई को लेकर भी परिवार में तनाव रहता है, किन्तु उसकी अम्मी स्पष्ट रूप से कहती है- “मैं औरत हूँ अच्छी तरह से जानती हूँ, खूब अच्छी तरह से जानती हूँ कि इस नए दौर में औरतों के लिए मजबूती क्या होनी चाहिए। लड़की अच्छा-बुरा सोचे यह अक्ल तो तालीम ही दे सकती है।” महरूख का मंगेतर 'रफत' उसे जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदैव प्रेरित करता रहता है।

सात नदियाँ एक समंदर उपन्यास में स्त्री पर होने वाले यौन शोषण, का बेबाक चित्रण किया गया है। इस उपन्यास की नायिका 'तैयबा' वर्तमान सत्ता की विरोधक है, अतः उसे कैदखाने में तमाम तरह की यातनाएं दी जाती हैं। उसका यौन शोषण किया जाता है। “अपने को कमरे में तनहा पाकर तैयबा को जैसे होश आया। नंगा शरीर बिजली की रौशनी में चमक रहा था। उसे अपने शरीर से नफरत होने लगी। यह नारी का शरीर सिर्फ भोगने के लिए है, चाहे प्रेम से चाहे तिरस्कार से।”

स्त्री चेतना के ये बिन्दु इस बात की पुष्टि करते हैं की स्त्री सदियों से चले आ रहे अन्याय और शोषण के विरुद्ध उठ खड़ी होने के लिए तत्पर हैं।

अक्षयवट उपन्यास में भी स्त्री के यौन शोषण का घृणित रूप सामने आया है। स्त्री के साथ भेद-भाव की नीति उसके जन्म से पूर्व ही प्रारंभ हो जाती है। नासिरा शर्मा ने स्त्रियों के साथ होने वाले भेद-भाव का चित्रण बखूबी किया है। लड़की को बोझ समझकर शाल्मली की माँ अपने पति से उसके लिए जल्द ही वर की तलाश के लिए कहती है- “जवान लड़की जिस घर में बैठी हो तो किस माँ को नींद आएगी।” स्त्री की पढाई का कोई मूल्य घर परिवार में नहीं रहता है। समाज की ऐसी मान्यता बन गयी है कि, जब तक विवाह नहीं हो जाता, तब तक लड़कियां पढ़ती रहें- शाल्मली अपने पति से पूँछती है- “तुम सोचते हो कि लड़कियां केवल विवाह के लिए पढ़ती हैं? नरेश उससे कहता है- “और नहीं तो क्या? खाली बैठने से तो कहीं अच्छा है कि लड़कियां अच्छा पति मिलने की ढंग से प्रतीक्षा करें।” नरेश, शाल्मली की बढ़ती पोजीशन देखकर व्याकुल होता रहता है। पुरुषों की इसी व्याकुलता को स्त्री विमर्शों में नए आयामों के द्वारा रेखांकित करने का कार्य नासिरा जी ने किया है। पुत्री के विवाह के समय भी परिवार वाले उसका रिश्ता तय करते हैं, इसमें उसकी मंशा नहीं पूँछी जाती।

जिन्दा मुहावरे में रहीमुद्दीन कहते हैं- “निजाम लड़का है, अपनी मर्जी का मुख्तार | रज्जो बिटिया हमार मर्जी के तावेदार, जहाँ हाथ थमाएंगे ! ओहि घर रुखसत होइए। विवाह के समय वर पक्ष अधिक आयु कन्या को पसंद नहीं करते, भले ही वर अधिक आयु का हो वे अपने पुत्र के लिए कम आयु की कन्या ढूँढते हैं। इसीलिए अक्षयवट उपन्यास की मौसी कहती है “अरे बेटवा मर्द साठा क पाठा, सच पूँछो तो मर्द बूढा ही कब होता है। औरत तो वीसी की खीसी | ” आज भी समाज में तमाम कुंवारी औरतें दिखाई देती हैं, जिनका विवाह उचित आयु में संपन्न न होने के कारण बूढी हो गयी। स्पष्ट है कि स्त्री के साथ पुरुष की तुलना में भेद-भाव की नीति अपनायी जाती है। उसे पुरुष की अपेक्षा हीन समझा जाता है। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में स्त्री संवेदना, स्त्री मुक्ति संघर्षों का विस्तार से वर्णन किया है। साथ ही स्त्री-अधिकारों, महिला सशक्तिकरण के कई छुए अनछुए पहलुओं के माध्यम से स्त्री-संवेदना का मानचित्र स्थापित किया है। स्त्रियों की समस्या, संघर्ष एवं पड़ताल करते हुए नासिरा शर्मा के उपन्यासों, कहानियों एवं कथेतर साहित्य के नाम से अभिज्ञानित होना आवश्यक है।

नासिरा शर्मा के कृतित्व को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता-

कथा साहित्य / कथेतर गद्य साहित्य

कथा साहित्य में जैसा कि कहा गया है उपन्यास और कहानियाँ आती हैं जो इस प्रकार हैं-
उपन्यास-

- (१) सात नदियाँ एक समंदर -
- (२) शाल्मली
- (३) ठीकरे की मँगनी-
- (४) जिन्दा मुहावर

फ्रांस और जर्मनी टी.वी. पर-

- ईरानी बाल युद्धबंदियों पर बनी फिल्म में सहयोग |

नवसाक्षरों के लिए कहानी पुस्तक-

- पढने का हक
- सच्ची सहेली
- एक थी सुल्ताना
- गिल्लो बी
- धन्यवाद-धन्यवाद

स्त्री विमर्श परक -

- औरत के लिए औरत

सीरियल / टेलीफिल्म-

टेलीफिल्म

- तड़प
- सेमल का दरख्त
- काली मोहिनी
- आया बसंत सखी
- माँ

सीरियल-

- शाल्मली
- वापसी
- दो बहनें
- यह मोहब्बत

विषय का महत्व

हिंदी कथा साहित्य का आविर्भाव नवजागरण की पृष्ठभूमि में होता है इसलिए यह स्वाभाविक है कि नवजागरण का दबाव इसकी संवेदना और इसके स्वरूप के निर्धारण में अहम् भूमिका का निर्वाह करे। इसीलिए नवजागरण की सामाजिक चिंताओं का आरंभिक हिंदी उपन्यासों में प्रतिफलन अस्वाभाविक नहीं है। यही कारण है कि नारी आरंभिक दौर से ही हिंदी औपन्यासिक चिंताओं के केंद्र में रही है। इसी क्रम में नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री शक्ति के समावेशी रूप राष्ट्रीय एकता के यथार्थ जैसे अन्यानेक महत्वपूर्ण बिंदु प्रमुखता से दिखाई देते हैं। नासिरा शर्मा राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ के क्रम में इस बात का ऐलान करती हैं कि, "वह आधी दुनिया के लिए नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए लिखती है।"

नासिरा शर्मा की कई ऐसी कहानियाँ हैं जो स्त्री की बुनियादी अस्मिता की दास्तान है जो स्त्री संवेदना के भयानक उठापटक के समय में जो ख़ास संगदिली का सामना करना पड़ता है उसका विस्तृत बयान है। स्त्रियों की अधीनस्थ स्थिति वैसे ही उन्हें दयनीय बनाती और कठिन वक्त में ये मार उन पर दोहरी पड़ती है। इन स्त्रियों के अन्दर उनके बाहरी कोमल स्वरूप के भीतर एक ऐसा मजबूत कोर है जो उन्हें हर तकलीफदेय समय में अपना सिर पानी के ऊपर उठाये रखने में कारगर साबित करता है इन्हीं स्त्री संवेदनाओं का सशक्त मानचित्र खड़ा करना विषय का महत्वपूर्ण बिंदु है।

हमारे द्वारा प्रस्तुत शोध-प्रबंध की कुछ विशेषताएं -

- 1) हमारे द्वारा इस शोध प्रबंध में स्त्री संवेदना के विभिन्न आयामों को दिखाने का प्रयास किया गया है।
- 2) प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रथम बार स्त्री संवेदना के स्वरूप, परिभाषा एवं क्षेत्र का अध्ययन किया गया है।
- 3) मैंने पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं वैश्विक स्तर पर स्त्री की संवेदनशीलता का यथार्थ अवलोकन किया है।

- 4) हमारे द्वारा आलोच्य कृतियों के माध्यम से वर्तमान भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति में स्त्री संवेदना की यथार्थ स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।
- 5) आलोच्य शोध प्रबंध में नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम विषय को आधार बनाकर आधी आबादी के वैचारिक स्वतंत्रता एवं सहकार की आवाज को बुलंद किया गया है।
- 6) आलोच्य रचनाओं की प्रमुख समस्याओं को विशेषकर नारी जीवन से संदर्भित तथ्यों को मैंने इस शोध प्रबंध में उजागर करने की कोशिश किया है।
- 7) इस शोध प्रबंध में समूची स्त्री जाति की संवेदना, सिकन, छटपटाहट एवं उनके योगदान का अध्ययन करने की मैंने कोशिश की है न की जाति या संप्रदाय में विभाजित करके।
- 8) औरत और मर्द दोनों का समाज में बराबर का दर्जा है प्रस्तुत शोध प्रबंध में इसकी मर्यादा का भी जगह-जगह अध्ययन किया गया है।
- 9) नारी की वैचारिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता एवं ग्राहस्थय जीवन में उसकी महत्ता कितनी कारगर है इसका भी व्यवरेवार वर्णन किया गया है।
- 10) नासिरा शर्मा का स्त्री संवेदना के माध्यम से जन जागृति के अवदान का समूचे शोध प्रबंध में मैंने जिक्र करने एवं स्त्री संवेदना के विविध आयामों को उद्घाटित करने की कोशिश की है।

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में भारत, ईरान, इराक, भोपाल की गैस त्रासदी से प्रभावित स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, स्थिति का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अंकन हुआ है। मानवीय संवेदना, दर्द एवं बेबसी को वे सीमाओं में बांधकर देखने की पक्षपाती नहीं हैं इसी कारण उनका साहित्य सरहद के इस पार से उस पार तक की संवेदना को अपने कैनवास में समेटे रहता है। अतः मैंने अपना शोध प्रबंध “नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम” प्रो. डॉ शन्नो एच. पाण्डेय मैडम के निर्देशन में प्रस्तुत कर रहा हूँ। प्रस्तुत शोध-प्रबंध का आलोच्य विषय “नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम” है। हिन्दी साहित्य में नासिरा शर्मा पर अनेक कार्य हुए हैं किन्तु इस विषय पर एक भी शोध-ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है अतः यह शीर्षक -नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम का विश्लेषण एवं मूल्यांकन मेरी तरफ से पहला प्रयास है।

स्वातंत्रयोत्तर काल में भारतीय सामाजिक व्यवस्था में नारी जीवन की स्थिति के पुनर्निर्माण में सरकारी एवं गैरसरकारी संगठनों ने अनेक प्रकार के प्रयास किए हैं जिसके कारण औरत का कद काफी हद तक बढ़ा है। स्त्री संवेदना पर केंद्रित नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में सामाजिक, राष्ट्रीय उत्कर्ष की झांकी औरत के छोटी – छोटी खुशियों, आवश्यकताओं के माध्यम से देखा जा

सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य में इसका विस्तार से निरूपण करने में उक्त विषय की महत्ता निहित की गई है।

मेरा मुख्य विषय स्त्री संवेदना से जुड़ा हुआ है जिसपर मैंने अधिका बल दिया है। मैंने अपने माता – पिता एवं गुरुजनों के आशीर्वाद एवं सदासयता से ही यह शोध कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

शोध प्रबंध की रूपरेखा

प्रथम अध्याय : नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- (1) व्यक्तित्व
- (2) जन्म
- (3) पारिवारिक जीवन
- (4) शिक्षा एवं परिवेश
- (5) विवाह एवं वैवाहिक जीवन
- (6) नौकरी एवं व्यवसाय
- (7) व्यक्तित्व के अंतरंग एवं बहिरंग पक्ष
- (8) पुरस्कार और सम्मान

नासिरा शर्मा का कृतित्व : परिचयात्मक विवरण

- (1) उपन्यास
- (2) कहानी संग्रह
- (3) विशिष्ट कहानियाँ
- (4) स्त्री विमर्श परक लेख
- (5) अनुवाद, डायरी और रिपोर्टाज
- (6) सीरियल लेखन संस्करण और विमर्श

द्वितीय अध्याय : स्त्री संवेदना की अवधारणा

- (1) संवेदना का आशय
- (2) संवेदना अर्थ और परिभाषाएँ

- (3) संवेदना का क्षेत्र विस्तार
- (4) संवेदना और साहित्य में अंतरसंबंध
- (5) संवेदना और नारी मन

तृतीय अध्याय : स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य में स्त्री संवेदना का विकास: एक सर्वेक्षण

प्रमुख महिला कथाकारों के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना

- (1) स्वातंत्रोत्तर कथा साहित्य में स्त्री संवेदना की भूमिका
- (2) कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना
- (3) मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना
- (4) मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना
- (5) मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना
- (6) ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना
- (7) मृणाल पांडे के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना
- (8) प्रभा खेतान क्षमा शर्मा एवं अन्य प्रमुख लेखिकाओं के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना का सर्वेक्षण

चतुर्थ अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना

- (1) उपन्यास अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
- (2) 'सात नदियां एक समंदर' उपन्यास में स्त्री संवेदना
- (3) 'शाल्मली' उपन्यास में स्त्री संवेदना
- (4) 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में स्त्री संवेदना

पंचम अध्याय : नासिरा शर्मा के कहानियों में स्त्री संवेदना

- (1) पत्थरगली
- (2) संगसार
- (3) इब्नेमरियम
- (4) शामी कागज

- (5) सबीना के चालीस चोर
- (6) खुदा की वापसी
- (7) गूंगा आसमान
- (8) इंसानी नस्ल
- (9) 'बुतखाना' कहानी संग्रह में स्त्री संवेदना

➤ उपसंहार

➤ संदर्भ ग्रंथ सूची

➤ शोध प्रबंध में विषय-वस्तु का विवरण

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है , साथ ही प्रत्येक अध्याय के अंत में संदर्भ सूची दी है।

प्रथम अध्याय : नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय में मैंने नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत लेखिका का जन्म, शिक्षा , पारिवारिक स्थिति , व्यवसायिका स्थिति , विवाह एवं वैवाहिक जीवन के बाद आने वाली पारिवारिक समस्याओं पर बल दिया है कारण की नासिरा शर्मा मुस्लिम परिवार में जन्मी, पाली-बढ़ी हैं और वे विवाह हिन्दू ब्राह्मण परिवार में की है अस्तु पारिवारिक दंश और संवेदनात्मक टूटन का सामना तो करना ही था। अगले कड़ी में लेखिका के बहिरंग व्यक्तित्व एवं पुरस्कार – सम्मान का विवरण प्रस्तुत किया है। प्रथम अध्याय को मैंने दो भागों में विभाजित किया है पहला व्यक्तित्व और दूसरा कृतित्व। कृतित्व के अंतर्गत नासिरा शर्मा के सम्पूर्ण कथा साहित्य का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत हुआ है कारण कि लेखिका के कथा साहित्य में मुझे स्त्री संवेदना के विविध आयामों का मूल्यांकन करना था किन्तु नासिरा शर्मा के कुछ प्रमुख कहानियों और तीन उपन्यासों में ही स्त्री संवेदना का मानचित्र दिखाई पड़ता है अस्तु मैंने परिचयात्मक विवरण में सम्पूर्ण कथा साहित्य के मूल थीम को अलग – अलग विश्लेषित किया है जिससे मूल शीर्षक की सोद्देश्यता पूर्ण हो सके और प्रथम अध्याय “नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व” में लेखिका का सम्पूर्ण परिचय संवेदनात्मक लेखिका के तौर पर हो सके। नासिरा शर्मा एक साहित्यकार होने के साथ – साथ एक कुशल पत्रकार भी हैं जिसके कारण उनका व्यक्तित्व बहुआयामी एवं दृष्टि पैनी हो जाती है

| उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है की वे घटना के तथ्य तक जाती हैं और जब तक स्वयं अपनी आँखों से घटना चक्र का अवलोकन और निरीक्षण नहीं कर लेती तब तक उक्त घटना से संदर्भित साहित्य की सर्जना नहीं करती। हाँ यदि मामला उनके समझ में यथार्थ है और समस्यामूलक भी तो चाहे परिणाम कुछ भी हो ऐसी विषयवस्तु को वे अपने साहित्य का माध्यम अवश्य बनाती है। 'सात नदियां एक समंदर', 'जहां फव्वारे लहू रोते हैं' ईरान ,इराक की क्रांति पर आधारित ऐसी ही कृतियां हैं | इस अध्याय के अंतर्गत नासिरा शर्मा के सभी उपन्यासों एवं कहानियों में स्त्री संवेदना की विषयवस्तु की खीज किया गया है जिस कृति में स्त्री संवेदना का आविर्भाव हुआ है उनको मूल अध्याय में विस्तार से बताया गया है और जिनमें स्त्री संवेदना की प्राप्ति नहीं हुई है उस कृति के मूल थीम का संक्षेप में परिचय दिया गया है।

नासिरा शर्मा का जीवन अनेक उतार – चढ़ाव से गुजारा है जो उनके खुद के द्वारा चुना हुआ जीवन है। परिवार में सांप्रदायिक संगम ने जहां उनके व्यक्तिगत जीवन में संघर्ष उत्पन्न किए वहीं उनके साहित्यिक जीवन में आकर्षण भी कारण की हिन्दू , मुस्लिम , इशाई इन तीन संप्रदायों में लेखिका ने अपना एवं अपने बच्चों का निकाह करवाया जिसके कारण पाठक और आलोचक दोनों को इनके व्यक्तित्व ने काफी प्रभावित किया है। इसी परिचयात्मक विवरण एवं कृतित्व की विशिष्टता का विश्लेषण इस अध्याय में मैंने किया है जो तर्कसंगत है।

द्वितीय अध्याय : स्त्री संवेदना की अवधारणा

प्रस्तुत अध्याय में मैंने संवेदना का आशय, संवेदना अर्थ और परिभाषाएँ, संवेदना का क्षेत्र विस्तार, संवेदना और साहित्य में अंतरसंबंध, संवेदना और नारी मन को रूपायित किया है। संवेदना का अर्थघटन कराते हुए विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के मत एवं परिभाषाओं के उदाहरण के रूप में अंकित किया है। संवेदना के कितने आयाम और क्या इसका क्षेत्र विस्तार होगा इस पर भी मैंने मनोविज्ञान एवं साहित्यिक पुस्तकों के माध्यम से तार्किक मूल्यांकन किया है। इसी अध्याय में संवेदना और साहित्य एक दूसरे से कैसे अंतर्संबंधित हैं इसका जिक्र करते हुए हिन्दी साहित्य के कुछ प्रमुख रचनाकारों के रचनाओं से उदाहरण अंकित है। अंत में संवेदना और नारी मन की संक्षिप्त चर्चा किया है।

तृतीय अध्याय : स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य में स्त्री संवेदना का विकास: एक सर्वेक्षण

इस अध्याय में हिन्दी साहित्य की पूर्वपीठिका में 'महादेवी वर्मा' 'सुभद्रा कुमारी चौहान' 'बंग महिला' की स्त्री संवेदना विषयक अवधारणा को स्पष्ट करने की कोशिश की

गई है। इसके पश्चात् कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पांडे ममता कालिया आदि स्वातंत्रोत्तर महिला कथाकारों के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयामों का मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय में यह विश्लेषित हुआ है कि प्रमुख महिला कथाकारों ने किन – किन मुद्दों को अपने कथा साहित्य में नारी मुक्ति हेतु उठाया है। उदाहरण के लिए – पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री मुक्ति की पक्षधर नहीं है, लैंगिक विभेद नारी उत्थान के लिए सबसे सस्ती विचारधारा है, यौन सुचिता केवल महिलाओं के ऊपर आरोपित हथियार है जिससे जब चाहे तब पुरुष प्रधान समाज औरत पर वार कर सकता है। आत्मनिर्णय एवं वैचारिक स्वतन्त्रता की बंधी हुई बेड़ी भी नारी संवेदना को आहत करती है ऐसे अनेक मुद्दे महिला कथाकारों के कथा साहित्य में देखने को मिलता है जिसका संवेदनात्मक अध्ययन इस अध्याय में किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

चतुर्थ अध्याय में नासिरा शर्मा के उन उपन्यासों का सम्यक विश्लेषण किया गया है जिनमें स्त्री संवेदना की विषयवस्तु एवं नारी मुक्ति का विचार उभर कर सामने आया है। लेखिका के तीन उपन्यास 'सात नदियां एक समुंदर' (बहिस्ते जहरा) 'शाल्मली' और 'ठीकरे की मंगनी' में स्त्री संवेदना के विविध आयाम चित्रित हुए हैं अतः इन्हीं तीनों उपन्यासों में नारी की संवेदना, उसकी मुक्ति में बाधक तत्वों का पहचान कर इस अध्याय का संवेदनात्मक मूल्यांकन किया है। 'सात नदियां एक समुंदर' उपन्यास की सातों नायिकाओं के शैक्षिक, वैवाहिक, राजनीतिक, पारिवारिक एवं राष्ट्र प्रेम के लिए अपनी बलि चढ़ा देने की प्रबल संवेदना का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन एवं अनुसंधान इस अध्याय में हुआ है।

'शाल्मली' उपन्यास की नायिका परंपरा के साथ नवाचार से भी भिन्न है, अतः विवाह के पूर्व ही वह ऐसे पति, परिवार की आकांक्षी थी कि जो उसके शिक्षा, आर्थिक स्वतन्त्रता, मान-सम्मान को कभी कम न समझे, उसे ऐसा परिवार मिला भी किन्तु पुरुष के अहं भाव की शिकार शाल्मली होती है और वे सभी अमानवीय प्रताड़नाओं से गुजरते हुए अपनी कोख उजाड़ देती है। परंपरावादी होते हुए भी उसने आधुनिकता को धारण किया अपनी नौकरी कायम रखी, एक छत के नीचे होते हुए भी उसने पुरुष को नकार दिया किन्तु संबंध विच्छेद नहीं किया।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास मुस्लिम परिवार के पुरुष एवं महिला के पारिवारिक, वैवाहिक, शैक्षणिक, नौकरी-पेशा आदि मुद्दों से जुड़ा उपन्यास है, इसमें पुरुष और महिला की विरोधाभासी संवेदना एवं शिकन परिलक्षित हुआ है किन्तु कथा नायिका 'महरुख' त्याग और बलिदान के साथ शसक्त व्यक्तित्व की धनी नायिका है वह पुरुष को मर्यादा रूप में चाहती है

जिसपर उसका एकनिष्ठ अधिकार एवं प्रेम हो किन्तु उसका सौहर आर्थिक, सामाजिक, पद – प्रतिष्ठा से योग्य किन्तु चापलूस, दुष्चरित्र है महरूख से सच्चा प्रेम भी करता है और सुधर भी जाता है पर कथा नायिका अकेले समाज सेवा में जीवन व्यतीत करना स्वीकार करती है और विवाह से इंकार कर देती है। प्रस्तुत अध्याय मेन स्त्री की अस्मिता की खोज, उसके स्वाभिमान की रक्षा, शोषण के विरुद्ध आवाज, आत्मनिर्णय की संकल्पना आदि संवेदनात्मक पहलुओं का तार्किक विश्लेषण किया गया है।

पंचम अध्याय : नासिरा शर्मा के कहानियों में स्त्री संवेदना

इस अध्याय में स्त्री संवेदना की प्रस्थापनाएँ – साहित्य में जो स्त्री संवेदना है उसके अंतर्गत नासिरा शर्मा के कहानियों का संवेदनात्मक अध्ययन किया गया है। आलोच्य लेखिका के कहानी संग्रहों एवं संवेदनात्मक प्रमुख कहानियों में जिस – जिस स्थान पर जिस – जिस कहानी में स्त्री की मुक्ति उसकी स्वतन्त्रता, परंपरा का दबाव एवं परम्पराओं से संघर्षरत स्त्री चरित्र दिखाई पड़ा है उसका संवेदनात्मक अध्ययन हुआ है। नासिरा शर्मा की कहानियों की विषयवस्तु नारीवादी आंदोलन की सीमाओं से बाहर रहकर वृहत्तर सामाजिक, राजनीतिक संवेदना पर विचार करती हैं। इनहोंने विभिन्न देशों और समाजों की स्त्रियों एवं उनकी समस्याओं को निकट से देखने – समझने की कोशिश की हैं और इसी कोशिश की यथार्थ परक साहित्यिक धरातल लेखिका का कहानी संग्रह एवं कहानियाँ हैं। प्रस्तुत अध्याय में स्त्री संवेदना के पारिवारिक, वैवाहिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, यौनिक, स्वतन्त्रता में बाधा उत्पन्न करने वाले कारकों की पहचान करके नारी संवेदना के विविध आयामों को रूपायित किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में मैंने नासिरा शर्मा के कहानियों का आधार लेकर अन्य लेखिकाओं के कथा साहित्य अथवा स्त्री विमर्श परक पुस्तकों से उदाहरण प्रस्तुत किया है। संवेदना की वस्तुनिष्ठता एवं शोध की मौलिकता हेतु मैंने सबसे ज्यादा लेखिका की कहानियों से ही संदर्भ प्रस्तुत करने की कोशिश किया है।

➤ उपसंहार

उपसंहार के अंतर्गत मैंने अपने शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय से लेकर पंचम अध्याय तक के संवेदनात्मक चिंतन का सार निष्कर्ष रूप में रखा है और नासिरा शर्मा कृत हिन्दी कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी संग्रह) में रूपायित स्त्री संवेदना के विविध आयामों को गहराई से विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है।

➤ संदर्भ ग्रंथ सूची

- आधार ग्रंथ सूची
- सहायक ग्रंथ सूची
- सहायक शोध प्रबंध
- कोश ग्रंथों की सूची
- पत्र एवं पत्रिकाएँ

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ / सहायक ग्रंथ / कोश ग्रंथ एवम् पत्र पत्रिकाएँ

आधार ग्रंथ सूची

नासिरा शर्मा के उपन्यासों की सूची

- (1) शर्मा नासिरा, 'अक्षयवट', भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 प्रथम संस्करण 2003
- (2) शर्मा नासिरा, 'कुइयाँजान', समसामयिक प्रकाशन, 3320-21, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण -2014
- (3) शर्मा नासिरा, 'ज़ीरो रोड', भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड नयी दिल्ली - 110003
- (4) शर्मा नासिरा, 'जिंदा मुहावरे' वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002. प्रथम संस्करण 1993
- (5) 'ठीकरे की मँगनी किताब घर प्रकाशन, 485556 / 24, अंसारी रोड, दरियागंजनई दिल्ली- 110002, प्रथम संस्करण 1989

(6) शर्मा नासिरा, 'बहिश्ते जहरा' (सात नदियाँ एक समंदर) वाणी प्रकाशन, 4695 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1995

(7) शर्मा नासिरा, 'शाल्मली' किताब घर प्रकाशन, 4855-56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1987

नासिरा शर्मा के कहानी साहित्य की सूची

(1) शर्मा नासिरा, 'इब्नेमरियम' किताबघर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002 प्रथम संस्करण - 1994

(2) शर्मा नासिरा, 'इन्सानी नस्ल' किताबघर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज - नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण - 2001

(3) शर्मा नासिरा, 'खुदा की वापसी' भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, प्रथम संस्करण - 1999

(4) शर्मा नासिरा, 'गूंगा आसमान' वाग्देवी प्रकाशन, सुगन निवास, चंदन सागर, बीकानेर - 334001, प्रथम संस्करण 1999 -

(5) शर्मा नासिरा, 'दूसरा ताहमहल' इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, के - 71, कृष्णनगर, दिल्ली- 110051, प्रथम संस्करण - 2002

(6) शर्मा नासिरा, 'पत्थर गली' राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली- 110002, प्रथम संस्करण 1986

(7) शर्मा नासिरा, 'बुतखाना' लोक भारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डींग, महात्मा - गाँधी मार्ग, इलाहाबाद - 1, प्रथम संस्करण 2002

(8) शर्मा नासिरा, 'शामी कागज' वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण- 1997

(9) 'नासिरा शर्मा की शीर्ष कहानियाँ' किताब घर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2001

(10) शर्मा नासिरा, 'सबीना के चालीस चोर, किताब घर प्रकाशन, 4855-56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण, दिसम्बर-1997

(11) शर्मा नासिरा, 'संगसार' वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण 1993

लेख संग्रह

- (1) शर्मा नासिरा, 'औरत के लिए औरत' समसामयिक प्रकाशन, 3320-21जटवाड़ा. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2010
- (2) शर्मा नासिरा, 'राष्ट्र और मुसलमान', किताब घर प्रकाशन, 485556 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण-2002

समीक्षा लेख

- (1) शर्मा नासिरा, 'किताब के बहाने, किताब घर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण

संदर्भ ग्रंथ सूची

- (1) 'आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण', वी. एन. सिंह, जनमेजय सिंह, रावत पब्लिकेशन्स, सत्यम एपार्टमेंट, सेक्टर-3, जवाहर नगर, जयपुर-302004, प्रथम संस्करण - 2010
- (2) 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'बच्चनसिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1986
- (3) 'आओ पेपे घर चलें' (उपन्यास) 'प्रभा खेतान, सरस्वती विहार प्रकाशन, प्रथम संस्करण - 1990
- (4) 'आधुनिक हिन्दी साहित्य', 'ब्रह्मस्वरूप शर्मा', मनुप्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1996
- (5) 'इक्कीसवीं सदी की ओर', 'सुमन कृष्णकान्त राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पटना, प्रथम संस्करण 2001
- (6) 'उत्तर आधुनिकता कुछ विचार', 'सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, 21-1, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2000
- (7) 'उपनिवेश में स्त्री', 'प्रभा खेतान', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2004
- (8) 'उत्तर आधुनिकतावाद और दलित साहित्य' कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण - 2008
- (9) 'उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श', 'सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1996
- (10) 'उत्तर आधुनिक दौर में साहित्य', 'सुधीश पचौरी, प्रवीण प्रकाशन, 4760-61 (द्वितीय तल), 23, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2006

- (11) 'उत्तर आधुनिकता: कुछ विचार', 'देवशंकर नवीन', सुशांत कुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2000
- (12) 'औरत के हक में' दृ 'तसलीमा नसरीन, वाणी प्रकाशन, 4695-21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, अठारहवाँ
- (13) 'कथाकार: नासिरा शर्मा' दृ 'डॉ. ओहाल मोहन विट्टलराव ए. बी. एस. पब्लिकेशन्स, आशापुरा, सारनाथ, वाराणसी - 221007 (उत्तर प्रदेश), प्रथम संस्करण - 2012
- (14) 'काव्य के रूप' दृ (डॉ.) गुलाब राय', प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, छठा संस्करण - 1967
- (15) 'कायाकल्प (उपन्यास)' 'प्रेमचंद सरस्वती प्रेस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1981
- (16) 'जने अजीब' दृ 'नासिरा शर्मा प्रेमकुमार, परमेश्वरी प्रकाशन, बी-109, प्रीतविहार, दिल्ली-110092, प्रथम संस्करण-2011
- (17) 'दूसरे नवजागरण की ओर' 'शंभुनाथ', ज्ञानभारती, 4/14, रूपनगर, दिल्ली-110007, प्रथम संस्करण - 1993
- (18) 'नवजागरण और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल', 'बलीसिंह', शंकर पब्लिकेशन्स, सी-2941, गली नं. 12, भजनपुरा, दिल्ली-110053, प्रथम संस्करण- 2000
- (19) 'नवजागरण और प्रतापनारायण मिश्र': 'भगवती प्रसाद शर्मा, राधा पब्लिकेशन्स 4378 / 4 - बी, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 1994
- (20) 'नारी शोषण: आइने और आयाम' दृ 'आशारानी व्होरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली - 02, प्रथम संस्करण - 1982
- (21) 'नारी प्रश्न:' 'सरला माहेश्वरी', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, इलाहाबाद, पटना, पहला संस्करण - 2007
- (22) 'नारी भीतर और बाहर', 'कमला सिंघवी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण - 1985
- (23) 'नारीवादी विमर्श' दृ 'राकेश कुमार, आधार प्रकाशन, पंचकुला (हरियाणा), प्रथम संस्करण - 2011
- (24) 'नारी विमर्श: दशा और दिशा, सं. डॉ. एम. फिरोज खान, (डॉ.) शगुप्ता नियाज, आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ई-10/663, उत्तरांचल कॉलोनी, (निकट संगम सिनेमा), लोनी बार्डर, गाजियाबाद 201102, प्रथम संस्करण - 2010

- (25) 'नासिरा शर्मा के कथासाहित्य में समसामयिक बोध', 'डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर शेख बशीर, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127 / 1100, डब्ल्यू वन, साकेतनगर, कानपुर- 208014, प्रथम संस्करण - 2011
- (26) 'नासिरा शर्मा: शब्द और सेवंदना की मनोभूमि' (विवेचनात्मक आलेख), सं. - ललित शुक्ल, किताब घर प्रकाशन, 4855-56824, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2010
- (27) 'नासिरा शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व' दृ 'डॉ. विजय राउत, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता, 125 / 79-एल, गोविन्दनगर, कानपुर- 208006, प्रथम संस्करण-2010
- (28) 'परम्परा और उत्तर आधुनिकीकरण' (हिन्दी उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में), लेखक कमलेश अवस्थी, स्वराज प्रकाशन, 4697/3, 21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2006
- (29) 'प्रेमचंद विविध प्रसंग (भाग - 2) 'अमृतराय', हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1962
- (30) 'प्रेमचंद के कथा साहित्य में हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध', 'ओमप्रकाश सिंह, राधा-पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1995
- (31) 'प्रेमचंद विश्वकोश (भाग - 2)' दृ 'कमलकिशोर गोयनका, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1981
- (32) 'प्रेमचंदोत्तर कथासाहित्य और साम्प्रदायिक समस्याएँ' दृ 'ओम प्रकाश सिंह, नमन प्रकाशन, 378/4 - बी, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1998
- (33) 'बोगदे से बाहर' - (नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श), डॉ. अमरीश सिन्हा, शिल्पायन प्रकाशन, पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 10295, लेन नं.1, वेस्ट गोरखपार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032, प्रथम संस्करण - 2012
- (34) 'बंगाल रिनेशां एंड अदर एसेज', 'सुशोभन सरकार', पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1981
- (35) 'भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण', 'मोजम्मिल हसन 'आरजू', अजय वर्मा - कोमनवेलथ पब्लिशर्स, 4378 / 4-बी, गली मुरारी लाल, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण
- (36) 'भारतीय नवजागरण और यूरोप' 1993 'रामविलास शर्मा', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, इ.ए. / 6, मॉडल टाउन, दिल्ली-110005 401, चन्ना चौम्बर, करोल बाग नई दिल्ली-110005, प्रथम संस्करण-1996

- (37) 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष', 'विपिनचन्द्र और अन्य', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1990
- (38) 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ 'रामविलास शर्मा', राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 1953
- (39) 'भारत में स्त्री असमानता रू एक विमर्श' दृ 'गोपा जोशी', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 10, सिविलरी लाइन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006
- (40) भारतीय नारी: दशा और दिशा = आशारानी व्होरा, नेशनल, पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली - 02, प्रथम संस्करण - 1984
- (41) 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' दृ 'रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1977
- (42) 'महिला उपन्यासकार (21वीं शती की पूर्व संध्या के संदर्भ में) 'मधु सन्धु', निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण -2000
- (43) 'मुस्लिम कथाकारों का हिन्दी में योगदान', डॉ.नीलम शर्मा', संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, प्रथम संस्करण - 2001
- (44) विमर्श के विविध आयाम, डॉ. अर्जुन चव्हाण, वाणी प्रकाशन, 21-1, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002, प्रथम संस्करण - 2008
- (45) 'श्रृंखला की कड़ियाँ', 'महादेवी वर्मा', लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डींग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद - 211001, प्रथम संस्करण - 2008
- (46) 'स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ: रेखा कस्तवार', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006
- (47) 'स्त्रीवादी साहित्यिक विमर्श' 'जगदीश चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2000
- (48) 'स्त्री उपेक्षिता' (The Second Se) 'सीमोन द बोउवार' (अनुवादक प्रभा खेतान), सरस्वती विहार प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1990 प्रथम
- (49) 'स्त्री पुरुष कुछ पुनर्विचार', 'राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2001
- (50) 'समकालीन हिन्दी का सफर', 'बलराम', एज्यूकेशनल सप्लायर्स एण्ड ट्रेडर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1998
- (51) 'साहित्यलोचन', 'डॉ. श्यामसुंदर दास, इंडियन प्रेस, प्रयाग, दसवाँ संस्करण - 2001
- (52) 'साहित्य का साथी' '(डॉ.) हजारी प्रसाद द्विवेदी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा,

प्रथम संस्करण - 1962

(53) 'साहित्य का उद्देश्य', 'प्रेमचंद', हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1967

(54) 'साम्प्रदायिकता का ऐतिहासिक संदर्भ', 'प्रभा दीक्षित', मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, प्रथम संस्करण-1980

(55) 'साम्प्रदायिकता का सवाल' (नामवर सिंह), (स. जगदीश्वर चतुर्वेदी) राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद, डब्ल्यू न्यूमेन एंड कंपनी लिमिटेड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण - 1991

(56) साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास: डॉ. एम.बी.पटेल / डॉ. दिलीप मेहरा, ज्ञान प्रकाशन, 128/90जी ब्लॉक, क्रिदवईनगर, कानपुर- 208011संस्करण-2009

(57) हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास 'डॉ. सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, 18,इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003, चौथा संस्करण-2011

(58) 'हिन्दी उपन्यास कला' टंडन (डॉ.) प्रतापनारायण हिन्दी समिति, लखनऊ, प्रथम संस्करण-1970

(59) हिन्दी उपन्यास: समकालीन विमर्शत्रिपाठी (डॉ.) सत्यदेव, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण - 2000

(60) हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास (डॉ.) धनराज मानधाने, ग्रंथम् प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण - 1971

(61) हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग सिंह त्रिभुवन हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्रथम संस्करण 1973

(62) 'हिन्दी उपन्यास: सृजन और प्रक्रिया, (डॉ.) शिवबहादुर सिंह भदौरिया, शैलजा प्रकाशन - कानपुर, प्रथम संस्करण 1981

पत्र - पत्रिकाएँ -

1.सं. सागर शैलेंद्र, कथाक्रम, प्रकाश पैकेजर्स, 257-गौलागंज, लखनऊ,अक्टूबर-दिसंबर -2000

2. डा. अहमद एम.फीरोज़, वाङ्मय, (त्रैमासिक हिन्दीपत्रिका), ई-3 अब्दुल्लाह क्वार्टर्स, अमीर निशां अलीगढ़, जुलाई -2007

3. सं. यादव राजेन्द्र , हंस, अक्षर प्रकाशन दिल्ली अगस्त 2004

4. सं. शर्मा बी.डी., हिमप्रस्थ, (हि.प्रदेश) शिमला जून-2012, जनवरी-2012

5. वेद व्यास (सं.), मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, मार्च-अप्रैल-2012

6. गुप्ता अजय कुमार, गगनाञ्जलि, भारतीय संस्कृति सम्बंध परिषद नई दिल्ली, जुलाई-सितम्बर 2009

7. मैनेजर पाण्डेय (सं.) आधारशिला, नैनीताल, (उत्तराखण्ड), 2008, महादेवी विशेषांक
8. हरिनारायण सहयोगी, कथादेश, सहयात्रा प्रकाशन, अगस्त 2010

ज्ञान- शब्द-कोश

- (1) वर्मा रामचन्द्र, मानक हिन्दी कोश, प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन - 1966
- (2) नवल जी, नालन्दा विशाल शब्द सागर, नालन्दा प्रकाशन, दिल्ली- 1988
- (3) सत्यप्रकाश, बलभद्र प्रकाश, मानक हिन्दी अंग्रेजी कोश, मानक प्रकाशन, प्रयाग- 1971
- (4) सं. कालिका प्रसाद, वृहत हिन्दी कोश, ज्ञान मण्डल लि., वाराणसी, संस्करण -2001
- (5) चातक गोविन्द, आधुनिक हिन्दी शब्दकोश, तक्षशीला प्रकाशन, दिल्ली-1986
- (6) भारद्वाज एस.पी., संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, शब्दकोश, राधा-पब्लिकेशन्स
संस्करण - 2004